रात्रीक्लास ओमशांति 6.11.67

कचहरी करना अच्छा है। बतावे वा न बतावे फिर भी कचहरी अच्छी है। सच्च तो कोई मुश्किल ही बतावेंगे। तुम हो स्टुडेंट्स। तुमको क भी दिन मुरली मिस न करनी चाहिए। कहां भी हो मुरली मिस न करनी चाहिए। नहीं तो एक दिन अबसेंट पड़ जावेगा। मुरली कोई समय अच्छी चलती है तो प्वाइंट्स सुननी चाहिए। इस पर ध्यान देना पड़ता है। प्वाइंट्स बच्चे भूल जाते है। अभ्यास न करने कारण इतना उन्नति को नहीं पाते हैं। नहीं तो बाप युक्तियां बहुत बताते हैं। बाप को याद करना है। तीन चांस (मिला) है। बाप वा टीचर या गुरू तीनों में एक भी याद करे तो भी अहोसौभाग्य। माया ऐसी है जो तीनों से भी याद नहीं पड़ता। है एक ही ;परंतु भिन्न2 पढ़ाई ,भिन्न श्रीमत मिलती है ना। एक भी याद आवे तो उसका फायदा मिलता है। याद की यात्रा हो गई। बहुत कल्याण हो। हो सकता है पदमपति बन जावे। बच्चे समझते हैं 21जन्मों का वर्सा है। पैसे की तो बात ही नहीं। वहां होंगी सब सोने की चीजें। इस हिसाब से पदमपति तो बनते हो। यहां बैठे2 अपने स्वर्ग को जरूर याद करते होंगे। पढ़ाई याद रहे, टीचर याद रहे तो भी खुशी का पारा चढ़ता रहे। इतना जरूर है ज्ञान जो लेते हैं उनकी तीर्थों आदि तरफ बुद्धि नहीं जाती होगी। बाप के तरफ ही बुद्धि जाती होगी। मंदिर में देखने से भी बुद्धि का योग शिवबाबा के तरफ चला जावेगा। अच्छा ,ओमशांति। बच्चों को गुडनाइट।

रात्रीक्लास 12.11.67– निष्ठा में बैठो ऐसे कह कर खास बिठाना नहीं चाहिए। बाबा ने तो कहा कि कम कार डे दिल यार डे। आत्मा को बाप को याद करना है। तुम जबरदस्ती बैठते हो तो माया भी जबरदस्ती आती है। तुमको बिठाने का बहुत शौक है। वास्तव में आंखें भी बंद होनी न चाहिए। बाबा समझता है अंधा है। माशूक को आंखें बंद कर कैसे देखेंगे?तुम आशुक हो ना। सन्यासी लोग आंखें बंद कर बैठते हैं। तुमको बाबा ने समझाया है कि आंखें बंद कर न बैठना है। कोई को टेव होती है ना उनको देखने न चाहते हों तो आंखें बंद कर बैठेंगे। शिवबाबा से प्यार से होगा तो इनको (ब्रह्मा) को देखेंगे नहीं ;परंतु शिवबाबा तो इन द्वारा ही सबको देखते हैं ना। यह कहते हैं मैं देखते हुए नहीं देखता हूं। जानता हूं यह सब विनाश होता है। फिर भी आंखें बंद कर बैठना कायदे के विरुद्ध है। टीचर को भी (झुटका) आ जाती है। न पढ़ने वाले को न पढ़ाने वाले के (आगे) आंखें बद कर बैठना चाहिए। लिखत में भी प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जो लिखते हुए भी माशूक को देखते रहें। यह तो मोस्ट बिलवेड बाप है। उनके आगे माशूक के आगे आंखें बंद कर बैठे यह तो इन्सल्ट है। शिवबाबा को तो कब नींद आवेंगे नहीं। स्टुडेंट कब टीचर के आगे झुटके नहीं खावेंगे। वैसे क्लास में यह कायदा नहीं है। बच्चों को पढ़ना है ना। यहां भी तुम बच्चों को अटेंशन खिंचवाना चाहिए। तो बाप तरफ बुद्धि जावे। घड़ी2 कहते रहते हैं कि आत्माभिमानी होकर बैठो। अल्ला के बच्चे होकर बैठो। उल्लू के बच्चे होकर न बैठो। बेहद का बाप तो समझाय सकते हैं ना। बच्चों को कहेंगे अटेंशन। अपन को आत्मा समझो। यह है मूल बात। तुम आदि को भी जानते हो,अंत को भी जानते हो। अटैंशन कहने से ही तुम्हारी बुद्धि उपर चली जानी चाहिए। यह प्रैक्टिस करना बहुत अच्छा है। विलायत में जावे तो भी वह अवस्था रहे। बाहर में रहने वाले में भी नम्बरवार हैं। तीन/चार हैं जो पक्के पवित्र रहते हैं। विलायत में भी। बच्चों को अब यही बुद्धि में है कि वापस जाना है। पतित वापस जाय न सके। कयामत का समय है हिसाब–किताब चुक्तू कर ही जाना है। अब तुम बच्चों को सेलीवसी जरूर चाहिए। सभी को अनुभव होता होगा कि आंखें कैसे धोखा देती हैं। इन पर बड़ी सम्भाल करनी है। मैं आत्मा हूं। बाप को याद करना है। यह टेव होगी तो कहां भी आंखें जावेंगी नहीं। पास सभी तो नहीं होते। बड़ी जबरदस्त बादशाही स्थापन हो रही है। अच्छा ,मीठे2 बच्चों को गुडनाइट। अच्छा ,बच्चों को नमस्ते। अच्छाजी, ओमशांति अर्थात् अहम् आत्मा शांत स्वरूप बाप को याद करती हैं। अच्छा, अब विदाई। ओमशांति।